मार्च १९९९ हिंदी पत्रिका में प्रकाशित

जन्मशताब्दी-उद्‌बोधन

पिछले महीने हमने परम श्रद्धेय सयाजी ऊ बा खिन का जन्मशताब्दी दिवस मनाया। संत पुरुषों की जन्म-तिथियां उनके सद्गुणों को धारण करने हेतु हमारे लिए प्रेरणा की स्रोत बनें तो ही उनका महत्त्व है, उनकी सही उपादेयता है।

गुरुदेव ऊ बा खिन ने धर्म के व्यवस्था-प्रधान पक्ष को सदा गौण माना और उसके प्रयोग-प्रधान पक्ष को ही पूरा महत्त्व दिया। वे स्वयं जीवन भर धर्म धारण करते रहे और अपने साथी सहयोगियों तथा शिष्य-साधकों को भी धर्म धारण कर सकने का प्रशिक्षण देते रहे।

शील, समाधि और प्रज्ञा धर्म का प्रयोग-प्रधान पक्ष है। काया और वाणी से शील-सदाचारमय जीवन जीना, समाधि के अभ्यास द्वारा चित्त को वश में रखना और प्रज्ञा के बल पर चित्त को सरल, स्वच्छ बनाना, यही धर्म का व्यावहारिक पक्ष है जो सांदृष्टिक है याने प्रत्यक्ष है और अकालिक है याने तत्काल फलदायी है।

चित्त अपनी कुटिलता त्यागता है, सरल और स्वच्छ बनता है, मृदु और विनीत बनता है तो तत्काल हमारा भला सधने लगता है। सही माने में स्वतः स्वार्थ सधने लगता है।

चित्त कुटिलता त्यागता है तो व्यक्ति औरों के अहित में प्रवृत्त होने से बचता है। किंचितमात्र भी दुराचरण नहीं करता। अहंकार के तनाव-खिंचाव से मुक्त रहता है। इस प्रकार अपने अमंगल से बचता है तथा औरों के अमंगल का भी कारण नहीं बनता।

चित्त सरल, स्वच्छ होता है तो व्यक्ति सत्कर्मी होता है, सुभाषी होता है, शांत-इंद्रिय होता है। चित्त ऋजु होता है तो मंगल मैत्री से, सद्भावों से भर उठता है। जल, थल, नभ के दशों दिशाओं के सभी प्राणी चाहे स्थावर हों या जंगम, छोटे हों या बड़े, दृश्य हों या अदृश्य, जन्मे हों या अजन्मे, इहलौकिक हों अथवा अन्य लोकिक, सभी सुखी हों! सभी निर्विघ्न हों! सभी निरामय हों! सभी निरापद हों! अधिक से अधिक लोगों तक धर्म का संदेश पहुँचे। वे धर्म धारण करें। उनका मंगल हो! कल्याण हो! भला हो! इन्हीं स्वस्तिक भावों से उसके तन, मन, प्राण लहराने लगते हैं। इस कल्याणकारिणी अपरिमित मंगल मैत्री से वह स्वयं भी लाभान्वित होता है तथा अन्य प्राणियों के मंगल का वातावरण निर्मित करता है।

साधको! यही धर्म का व्यावहारिक पक्ष है। अतः यही कृत्य है, करणीय है।

धर्म के इस व्यावहारिक पक्ष में परिपूर्णता प्राप्त कर सकने में भले देर लगे, पर जन्मशताब्दी के पुण्य दिवस पर परम पूज्य गुरुदेव के आदर्शमय जीवन से प्रेरणा पाकर हम इस लक्ष्य के लिए प्रयत्नशील तो हो जायँ। इस दिशा की ओर कदम-कदम आगे बढ़ने तो लगें। जरा-जरा ही सही, पर मंगल सधने ही लगेगा। शनैः शनैः आगे बढ़ते हुए अपना अधिक-अधिक मंगल साधते हुए ही हम उस चरम पद तक पहुँच पायेंगे।

हजार बाधाओं के बावजूद भी सद्धर्म धारण करने का हमारा उत्साह मंद न पड़े, प्रयत्न शिथिल न हो, यही कल्याणकर है!

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

प्रज्ञप्ति

इस वर्ष दीर्घ शिविर का समापन करते हुए पूज्य गुरुजी ने दो महत्त्वपूर्ण योजनाओं की घोषणा की; –

१. **'धम्म तपोवन'** की स्थापना – धम्मगिरि से पश्चिम दिशा की ओर सटी हुई जमीन पर एक ऐसा ध्यान केंद्र बनेगा, जहां केवल दीर्घ शिविर ही लगेंगे।

दीर्घ शिविर में सम्मिलित हुए साधक बखूबी समझ सकते हैं कि धर्म में प्रतिष्ठित होने के लिए यह नया साधना केंद्र कैसा अनमोल अवसर प्रदान करेगा। जो आचार्य स्वयं शिविर में सम्मिलित होते हैं वे इसके महत्त्व को और अधिक स्पष्टतया समझ सकते हैं कि धर्मतरंगों से आप्लावित शांत, नीरव वातावरण में उनकी तपस्या कितनी गहन फलदायी होती है। क्योंकि उस समय दस दिवसीय साधना शिविर न होने के कारण ध्यान में कोई विक्षेप नहीं होता।

ऐसा ही अपूर्व वातावरण अब पूरे वर्ष भर धम्मगिरि के समीप 'धम्म-तपोवन' में उपलब्ध हो सकेगा, जहां केवल २०, ३०, ४५ ही नहीं, बल्कि ६० तथा ९० दिवसीय शिविर भी लगा करेंगे।

निर्माण का कार्य शीघ्र आरंभ किया जाना है ताकि अगले वर्ष साधक इसका लाभ ले सकें। योजना के प्रथम चरण में २०० साधकों के लिए प्रत्येक के स्वतंत्र निवास-स्थान एवं शून्यागार तथा अन्य सभी आवश्यक सुविधाओं की पूर्ति होगी। योजना पूर्ण होने पर केंद्र में ५०० पुरुष तथा ५०० महिलाओं के लिए ये सभी सुविधाएं उपलब्ध होंगी। केंद्र में दो स्तूप होंगे, जिनमें अंततः कुल मिला कर एक हजार शून्यागार होंगे। साथ ही आवश्यक संख्या में धर्मकक्ष, भोजनालय, रसोईघर, आचार्य तथा सहायक आचार्यों के निवास-स्थान आदि होंगे।

४५ दिन से अधिक कालावधि के शिविर आयोजित करने के पहले पूज्य गुरुजी चाहते हैं कि नये केंद्र पर कम से कम एक वर्ष तक अन्य दीर्घ शिविर लगते रहें, ताकि सन २००१ में ६० तथा ९० दिवसीय शिविरों का सुफलदायी आयोजन हो सके।

धम्मतपोवन तथागत की कल्याणी शिक्षा को चिरस्थाई करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। सद्धर्म अपने शुद्ध रूप में पुनः प्रतिष्ठित और प्रसारित हो, इसके लिए आवश्यक है कि आने वाली हर पीढ़ी में मुक्ति के मंगलदायी मार्ग पर आरूढ़ गंभीर साधक तैयार हों। धम्मतपोवन का यही उद्देश्य है। ६० तथा ९० दिवसीय शिविरों का संचालन करते हुए इनकी धर्मदेसना पूज्य गुरुजी स्वयं देंगे जो कि टेप पर रिकार्ड हो जाने के कारण भावी पीढ़ियों के

प्रशिक्षण के काम आयेगी।

भारत तथा विश्व में विपश्यना की पुनर्स्थापना करने की पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की धर्माकांक्षा पूरी करने में यह तपोवन प्रचुर मात्रा में उपयोगी सिद्ध होगा।

इस महान कार्य के लिए देश-विदेश के उदार साधकों द्वारा दान आना आरंभ हो गया है और निर्माणकार्य अविलंब आरंभ होने की आशा है।

२. **'सयाजी ऊ बा खिन विपश्यना ग्राम'** की स्थापना – धम्मगिरि के पूर्व दिशा की ओर सटी हुई जमीन पर केवल विपश्यी साधकों के लिए एक ऐसा आदर्श ग्राम बनेगा, जहां साधक को निजी निवासगृह की आवश्यक सुख-सुविधाओं के साथ-साथ आदर्श धर्ममय वातावण उपलब्ध होगा, जो कि उनके धर्म में पक सकने में सहायक होगा।

धम्मगिरि पर लंबे समय तक रहने वाले कई साधक इस तथ्य से परिचित हैं कि दीर्घकालीन गंभीर साधना एवं दीर्घकालीन सेवा के बाद सामान्य जीवनचर्या के लिए शांत वातावरण की कितनी आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त कई अवकाश प्राप्त साधक जीवन के सांध्यकाल में सुरक्षित सुविधापूर्ण धर्ममय वातावरण में शांतिपूर्वक रह सकने की धर्मकामना रखते हैं। सयाजी ऊ बा खिन विपश्यना ग्राम उनकी इस आकांक्षा-पूर्ति के लिए एक आदर्श स्थान सिद्ध होगा। इसमें पचास स्वतंत्र निवासीय बंगले होंगे, जिनमें दो शयनकक्ष, दो बाथरूम, एक बैठक, एक छोटा रसोईघर और एक छोटा ध्यानकक्ष होगा। ग्राम में ही व्यावसायिक रेस्तरां के माध्यम से उचित कीमत पर सुरुचिपूर्ण स्वस्थ भोजन एवं अन्य आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध होंगी। साथ में सुन्दर बगीचा, टहलने के स्थान, हेल्थक्लब, रिक्रियेशनरूम, ग्रंथालय, वाचनालय तथा धम्मप्रकोष्ठ आदि भी होंगे।

ये बंगले केवल विपश्यी साधकों को आजीवन आवास के लिए दिए जायेंगे। ग्राम-निवासियों के लिए सभी समय पंचशील-पालन और धर्म का वातावरण बनाए रखना अनिवार्य होगा। ग्राम के व्यवस्थापन के लिए पूज्य गुरुजी के मार्गदर्शन में एक समिति का गठन होगा, जिसके संचालन में निवासी साधकों की भी राय ली जायेगी।

जीवन भर के लिए आवास का शुल्क १५ लाख रु. होगा। इस राशि का एक महत्त्वपूर्ण अंश 'धम्मतपोवन' के निर्माण में लगेगा। इस अंश से ही धम्मतपोवन में लंबे शिविरों की सुविधा उपलब्ध होगी। इससे धम्मगिरि पर दस दिवसीय शिविरों में अधिक लोगों के सम्मिलित हो सकने की शक्यता बढ़ेगी। इस प्रकार आवास लेने वाले साधक की विपुल दानपारमी भी बढ़ेगी।